Paanchon Namazon Ke Fazaail (Hindi)

इफ़्तायार रिसाला : 298
Weekly Booklet : 298

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" की
एक क़िस्त बनाम

पांचों नमाज़ों के फ़ज़ाइल

सफ़हात 21

फ़ज्र व अ़स्र की फ़ज़ीलत की हिक्मत 02
नमाज़े अ़स्र छोड़ने वाले का अ़मल ज़ब्त 08
क़ब्र में डूबते सूरज का मन्ज़र 10
नमाज़े इ़शा से पहले सोने का नुक़्सान 18

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **पांचों नमाज़ों के फ़ज़ाइल**

सिने त़बाअ़त : रमज़ानुल मुबारक **1444** हि., अप्रैल **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

पांचों नमाज़ों के फ़ज़ाइल

येह रिसाला **(पांचों नमाज़ों के फ़ज़ाइल)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़हा 99 ता 114 से लिया गया है।

पांचों नमाज़ों के फ़ज़ाइल

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला : "**पांचों नमाज़ों के फ़ज़ाइल**" पढ़ या सुन ले उसे मस्जिद की पहली सफ़ में पाचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे।" (ترمذی،2/27،حدیث:484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ज्र व अ़स्र पढ़ने वाला जहन्नम में नहीं जाएगा

ह़ज़रते उ़मारा बिन रुवैबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "जिस ने सूरज के तुलूअ़ व ग़ुरूब होने (या'नी निकलने और डूबने) से पहले नमाज़ अदा की या'नी जिस ने **फ़ज्र व अ़स्र** की नमाज़ पढ़ी वोह हरगिज़ जहन्नम में दाख़िल न होगा।" (مسلم،ص250،حدیث:1436)

फ़ज्र व अ़स्र की फ़ज़ीलत की हिक्मत

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस के दो मत़लब हो सकते हैं : एक येह कि **फ़ज्र** व **अ़स्र** की पाबन्दी करने वाला दोज़ख़ में हमेशा रहने के लिये न जाएगा, अगर गया तो आ़रिज़ी (या'नी वक़्ती) त़ौर पर । लिहाज़ा येह ह़दीस उस ह़दीस के ख़िलाफ़ नहीं कि बा'ज़ लोग क़ियामत में नमाज़ें ले कर आएंगे मगर उन की नमाज़ें अहले हुक़ूक़ (या'नी जिन के हुक़ूक़ पामाल किये होंगे उन) को दिलवा दी जाएंगी । दूसरे येह कि **फ़ज्र** व **अ़स्र** की पाबन्दी करने वालों को اِنْ شَآءَاللّٰه बाक़ी नमाज़ों की भी तौफ़ीक़ मिलेगी और सारे गुनाहों से बचने की भी, क्यूं कि येही नमाज़ें (नफ़्स पर) ज़ियादा भारी हैं । जब इन पर पाबन्दी कर ली तो اِنْ شَآءَاللّٰه बक़िय्या नमाज़ों पर भी पाबन्दी करेगा, लिहाज़ा इस ह़दीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि नजात के लिये सिर्फ़ येह दो नमाज़ें ही काफ़ी हैं बाक़ी की ज़रूरत नहीं । ख़याल रहे कि इन दो नमाज़ों में दिन रात के फ़िरिश्ते जम्अ़ होते हैं, नीज़ येह दिन के कनारों की नमाज़ें हैं, नीज़ येह दोनों नफ़्स पर गिरां (या'नी भारी) हैं कि **सुब्ह़** सोने का वक़्त है और **अ़स्र** कारोबार के फ़रोग़ (या'नी ज़ोरो शोर) का, लिहाज़ा इन (नमाज़ों) का दरजा ज़ियादा है । (मिरआतुल मनाजीह़, 1/394)

आमिना के चांद ने आस्मान का चांद देख कर फ़रमाया

ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه बयान करते हैं : हम हुज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चौदहवीं रात के चांद की त़रफ़ देख कर इर्शाद फ़रमाया : "अ़न्क़रीब (या'नी क़ियामत के दिन) तुम अपने रब को इस त़रह़ देखोगे जिस त़रह़ इस चांद को

देख रहे हो, तो अगर तुम लोगों से हो सके तो नमाज़े फ़ज्र व अ़स्र कभी न छोड़ो।'' फिर ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने येह आयते मुबारका पढ़ी :

﴿وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ﴾(پ16،طٰہٰ:130)

(**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने रब को सराहते हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमक्ने से पहले और उस के डूबने से पहले) (مسلم،ص239،حدیث:1434ملخصاً)

इश्क़े रसूल में डूबी हुई शर्ह़

मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चौदहवीं रात के चांद की त़रफ़ देखा) के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी ख़ुदाए रह़मान के चांद ने आस्मान के चांद को देखा, डूबने वाले गहने (या'नी कम रौनक़ वाले) चांद को उस चांद ने देखा जो न ग़ुरूब हो न गहने (या'नी जो न डूबे और न जिस की रोशनी में कमी आए), ज़ाहिर के चमकाने वाले चांद को उस चांद ने देखा जो दिलो जान, रूह़ो ईमान को चमकाता है, रात में चमक्ने वाले चांद को उस चांद ने देखा जो अबदुल आबाद तक (या'नी हमेशा) हर वक़्त दिन रात चमक्ता है और चमकेगा। मैं क्या कहूं ! मुझे अल्फ़ाज़ भी नहीं मिलते ! اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى بَدْرِ النُّبُوَّةِ وَشَمْسِ الرِّسَالَةِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم۔ (**तरजमा :** ऐ **अल्लाह !** दुरूदो सलाम भेज और बरकत नाज़िल फ़रमा नुबुव्वत के चांद और रिसालत के सूरज पर) यूं कह लो कि इस चांद को जो सूरज से चमक्ता है उस चांद ने देखा जो सूरज को चमकाता है, जो दिलों पर दिन निकाल देता है। (आस्मान का) चांद भी ख़ुश नसीब है जिसे मह़बूब (صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने देखा, येह चांद (जिसे आज भी हम देखते हैं) वोह ही है जिस पर ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहें पड़ी हैं। येह ह़दीस आ़म्मतुल मुस्लिमीन

www.dawateislami.net

(या'नी आ़म मुसल्मानों) की दलील है कि मोमिन रब्बे पाक को महशर में भी आंखों से देखेंगे और जन्नत में भी देखा करेंगे। ख़याल रहे कि जन्नत की सारी ने'मतें नेक आ'माल का इ़वज़ (या'नी बदला) होंगी ख़्वाह अपने आ'माल का, ख़्वाह उस के आ'माल का जिस के तुफ़ैल जन्नत में गया मगर दीदारे इलाही किसी अ़मल का इ़वज़ (या'नी बदला) न होगा, ख़ालिस अ़ताए जुल जलाल (या'नी **अल्लाह** पाक की ख़ास इ़नायत) होगी, इन दो नमाज़ों पर पाबन्दी इस दीदार की लियाक़त व क़ाबिलिय्यत पैदा करेगी या'नी **फ़ज्र** व **अ़स्र** की पाबन्दी। दुन्या में **नमाज़** ऐसे पढ़ो कि गोया (या'नी जैसे) तुम ख़ुदा को देख रहे हो क्यूं कि यहां हिजाब (या'नी पर्दा) है वहां हिजाब (या'नी पर्दा) उठ जाएगा गोया ख़त्म हो जाएगा, उसे देख कर उस से कलाम करोगे। (हदीसे पाक में मौजूद आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं :) इस फ़रमाने आ़ली से मा'लूम हुवा कि इस आयत में तस्बीह़ व तह़मीद (या'नी **अल्लाह** पाक की पाकी और ता'रीफ़ बयान करने) से मुराद **नमाज़** है, चूंकि **फ़ज्र** व **अ़स्र** की नमाज़ में रात और दिन के मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते जम्अ़ हो जाते हैं, नीज़ **फ़ज्र** की नमाज़ सोने की ग़फ़लत का वक़्त है और नमाज़े **अ़स्र** कारोबार, सैरो तफ़रीह़ की ग़फ़लत का वक़्त, इन वुजूह (Reasons) से इन नमाज़ों की ताकीद ज़ियादा है, रब्बे पाक फ़रमाता है : ﴿اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا﴾ (پ15، بنی اسرائیل:78) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक सुब्ह़ के क़ुरआन (या'नी नमाज़) में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं।), नमाज़े **अ़स्र** के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाता है : ﴿حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى﴾ (پ2، البقرۃ:238) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** निगह़बानी करो सब नमाज़ों और बीच की नमाज़ की।) (मिरआतुल मनाजीह़, 7/517-518 मुलख़्ख़सन)

तीरह दिल को जल्वए माहे अ़रब दरकार है चौदहवीं के चांद तेरी चांदनी अच्छी नहीं

(ज़ौक़े ना'त, स. 185)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : तीरह दिल : अंधेरे में डूबा हुवा दिल। माहे अ़रब : अ़रब का चांद, मुराद प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

परवर्दगार का 100 बार दीदार

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : दुन्या की ज़िन्दगी में (जागते में) **अल्लाह** पाक का दीदार नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ख़ास है और आख़िरत में हर सुन्नी मुसल्मान के लिये मुम्किन बल्कि वाक़ेअ़। रहा क़ल्बी (या'नी दिल में) दीदार या ख़्वाब में, येह दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام बल्कि औलिया के लिये भी ह़ासिल है। **हमारे इमामे आ'ज़म** (अबू ह़नीफ़ा) رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه **को ख़्वाब में सो बार ज़ियारत हुई।** (मज़ीद फ़रमाते हैं :) उस (या'नी **अल्लाह** पाक) का दीदार बिला कैफ़ है, या'नी देखेंगे और (मगर) येह नहीं कह सकते कि कैसे देखेंगे ! जिस चीज़ को देखते हैं उस से कुछ फ़ासिला मसाफ़त (Distance) का होता है, नज़्दीक या दूर, वोह देखने वाले से किसी जिहत (या'नी सम्त, डायरेक्शन, Direction) में होती है, ऊपर या नीचे, दहने (Right) या बाएं (Left), आगे या पीछे, उस (या'नी रब्बे करीम) का देखना इन सब बातों से पाक होगा। फिर रहा येह कि क्यूंकर होगा ? येही तो कहा जाता है कि ''क्यूंकर'' को यहां दख़्ल नहीं, اِنْ شَآءَاللّٰه जब देखेंगे उस वक़्त बता देंगे। इस (त़रह़) की सब बातों का ख़ुलासा येह है कि जहां तक अ़क़्ल पहुंचती है, वोह ख़ुदा नहीं और जो ख़ुदा है, उस तक अ़क़्ल रसा (या'नी पहुंचती) नहीं, और

वक़्ते दीदार निगाह उस का इह़ाता़ (या'नी घेरा) करे, येह मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन, Impossible) है। (बहारे शरीअ़त, 1/20-22)

बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **160** पर है : जन्नती जब जन्नत में जाएंगे, हर एक अपने आ'माल की मिक़्दार से मर्तबा पाएगा और उस के फ़ज़्ल की ह़द नहीं। फिर उन्हें दुन्या की एक हफ़्ते की मिक़्दार के बा'द इजाज़त दी जाएगी कि अपने परवर्दगार की ज़ियारत करें और अ़र्शे इलाही ज़ाहिर होगा और रब्बे पाक जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में तजल्ली फ़रमाएगा और उन जन्नतियों के लिये मिम्बर बिछाए जाएंगे, नूर के मिम्बर, मोती के मिम्बर, याक़ूत के मिम्बर, ज़बर जद के मिम्बर, सोने के मिम्बर, चांदी के मिम्बर और उन (जन्नतियों) में का अदना (या'नी छोटे दरजे का) मुश्क व काफ़ूर के टीले पर बैठेगा और उन में अदना कोई नहीं, अपने गुमान (या'नी ख़याल) में कुरसी वालों को कुछ अपने से बढ़ कर न समझेंगे, और ख़ुदा का दीदार ऐसा साफ़ होगा जैसे आफ़्ताब (या'नी सूरज) और चौदहवीं रात के चांद को हर एक अपनी अपनी जगह से देखता है, कि एक का देखना दूसरे के लिये मानेअ़ (या'नी रुकावट) नहीं और **अल्लाह** करीम हर एक पर तजल्ली फ़रमाएगा, उन में से किसी को फ़रमाएगा : ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां ! तुझे याद है, जिस दिन तू ने ऐसा ऐसा किया था....? दुन्या के बा'ज़ मआ़सी (ना फ़रमानियां) याद दिलाएगा, बन्दा अ़र्ज़ करेगा : तो ऐ रब ! क्या तू ने मुझे बख़्श न दिया ? फ़रमाएगा : हां ! मेरी मग़्फ़िरत की वुस्अ़त (या'नी कुशादगी, फैलाव) ही की वज्ह से तू इस मर्तबे को पहुंचा। (बहारे शरीअ़त, 1/160)

जे मैं वेखां अ़मलां वल्ले, कुझ नईं मेरे पल्ले

जे मैं वेखां रह़मत रब दी, बल्ले बल्ले बल्ले

(या'नी जब मैं अपने आ'माल की त़रफ़ देखता हूं तो कुछ नहीं पाता और जब अपने रब की रह़मत की त़रफ़ देखता हूं तो ख़ुशी से झूम उठता हूं)

नमाज़े अ़स्र का डबल अज्र

ह़ज़रते अबू बसरा ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नूर वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह नमाज़ या'नी **नमाज़े अ़स्र** तुम से पिछले लोगों पर पेश की गई तो उन्हों ने इसे ज़ाएअ़ कर दिया लिहाज़ा जो इसे पाबन्दी से अदा करेगा उसे **दुगना** (या'नी Double) **अज्र** मिलेगा।

(مسلم، ص322، حدیث:1927)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी पिछली उम्मतों पर भी **नमाज़े अ़स्र** फ़र्ज़ थी मगर वोह इसे छोड़ बैठे और अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ हुए, तुम उन से इ़ब्रत पकड़ना।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/166)

दुगने अज्र की वुजूहात के मदनी फूल

❀ पहला अज्र पिछली उम्मतों के लोगों की मुख़ालफ़त करते हुए **अ़स्र** की नमाज़ पर पाबन्दी की वज्ह से मिलेगा और दूसरा अज्र **अ़स्र** की नमाज़ पढ़ने पर मिलेगा जिस त़रह़ दीगर नमाज़ों का मिलता है ❀ पहला अज्र इ़बादत पर पाबन्दी की वज्ह से मिलेगा और दूसरा अज्र क़नाअ़त करते हुए ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ने पर मिलेगा, क्यूं कि **अ़स्र** के वक़्त लोग बाज़ारों में कामकाज में मसरूफ़ होते हैं ❀ पहला अज्र **अ़स्र** की फ़ज़ीलत की वज्ह से मिलेगा क्यूं कि येह सलाते वुस्त़ा (या'नी दरमियानी नमाज़) है और दूसरा अज्र इस की पाबन्दी के सबब मिलेगा। (شرح الطیبی، 3/19، مرقاۃ المفاتیح، 3/139)

अ़मल ज़ब्त हो गया !

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते अबुल मलीह़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : एक ऐसे रोज़ कि बादल छाए हुए थे, हम सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते बुरैदा رَضِیَ اللهُ عَنْه के साथ जिहाद में थे, आप ने फ़रमाया : नमाज़े अ़स्र में जल्दी करो क्यूं कि **सरकारे** दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया है कि "जिस ने **नमाज़े अ़स्र** छोड़ दी उस का "अ़मल ज़ब्त" हो गया।"

(بخاری، 1/203، حدیث:553)

नमाज़े अ़स्र छोड़ने के आ़दी पर अन्देशए कुफ़्र

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : ग़ालिबन "अ़मल" से मुराद वोह दुन्यवी काम है जिस की वज्ह से उस ने **नमाज़े अ़स्र** छोड़ी (और) "ज़ब्ती" से मुराद उस काम की बरकत का ख़त्म होना। या येह मत़लब है कि जो **अ़स्र** छोड़ने का आ़दी हो जाए उस के लिये अन्देशा (या'नी ख़त़रा) है कि वोह काफ़िर हो कर मरे जिस से आ'माल ज़ब्त (या'नी बरबाद) हो जाएं, (अलबत्ता) इस का मत़लब येह नहीं कि **अ़स्र** छोड़ना कुफ़्र व इरतिदाद है। ख़याल रहे कि **नमाज़े अ़स्र** को क़ुरआने करीम ने "**बीच की नमाज़**" फ़रमा कर इस की बहुत ताकीद फ़रमाई नीज़ इस वक़्त रात व दिन के फ़िरिश्तों का इज्तिमाअ़ (या'नी जम्अ़ होना) होता है और येह वक़्त लोगों की सैरो तफ़रीह़ और तिजारतों के फ़रोग़ (या'नी बढ़ने और मसरूफ़िय्यत) का वक़्त है, इस लिये अक्सर लोग **अ़स्र** में सुस्ती कर जाते हैं, इन वुजूह़ (Reasons) से क़ुरआन शरीफ़ ने भी **अ़स्र** की बहुत ताकीद फ़रमाई और ह़दीस शरीफ़ ने भी।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1/381-382)

40 मिनट पहले तय्यारी (हि़कायत)

आ़रिफ़ बिल्लाह अबुल अ़ब्बास ह़रिसी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه **नमाज़े अ़स्र** की तय्यारी उस वक़्त से शुरूअ़ कर देते जब ज़ोह्र का वक़्त ख़त्म होने में चालीस मिनट बाक़ी होते, आप की तय्यारी का त़रीक़ा येह होता कि निगाहें झुकाए मुराक़बे में मश्ग़ूल हो जाते और वस्वसों से इस्तिग़्फ़ार करते रहते और ऐसा इस लिये करते ताकि आप पर **अ़स्र** का वक़्त इस ह़ालत में आए कि बारगाहे इलाही में ह़ाज़िरी से आप के सामने कोई रुकावट न हो।

(لواقح الانوار القدسیہ، ص492)

एक बयान ने कई नमाज़ी बना दिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों की अहम्मिय्यत अपने दिलों में उजागर करने, हर नमाज़ एहतिमाम के साथ अपने वक़्त के अन्दर बा जमाअ़त पढ़ने और दूसरों को नमाज़ों के लिये तय्यार करने की सोच बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से मुन्सलिक रहिये। आइये ! नमाज़ी बनने बनाने के मुतअ़ल्लिक़ एक "मदनी बहार" सुनते हैं : एक इस्लामी भाई जो कि स्कूल के त़ालिबे इ़ल्म थे। किसी मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले बयान का केसिट **"बे नमाज़ी की सज़ाएं"** पेश किया। उन के बक़ौल घर में वालिद साह़िब के इ़लावा कोई नमाज़ नहीं पढ़ता था। बहर ह़ाल उन्हों ने वोह केसिट घर में चलाया, वालिद साह़िब ने भी वोह बयान सुना और घर वालों को बार बार उस बयान को सुनने की तरग़ीब दी। उस बयान की बरकत से उस इस्लामी भाई के घर वाले नमाज़ी बन गए, ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मुरीद भी बने। फिर एक वक़्त वोह आया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन के घर में इस्लामी बहनों का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ भी होने लगा। उन के भाई

दा'वते इस्लामी के ना'त ख़्वां भी बने और जामिअतुल मदीना में दर्से निज़ामी के तालिबे इल्म भी जब कि उन के दो चचाज़ाद भाई दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना में हिफ़्ज़े क़ुरआन की सआदत पाने लगे।

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 647)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अहलो इयाल और माल बरबाद हो गए

सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस की **नमाज़े अस्र** निकल गई (या'नी जो जान बूझ कर नमाज़े अस्र छोड़े) (شرح مسلم للنووی، 126/5) गोया उस के अहलो इयाल व माल **"वत्र"** हो (या'नी छीन लिये) गए। (بخاری، 202/1، حدیث:552)

वत्र का मत्लब

हज़रते अल्लामा अबू सुलैमान ख़त्ताबी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **वत्र** का मा'ना है : "नुक़्सान होना या छिन जाना," पस जिस के बाल बच्चे और माल छिन गए या उस का नुक़्सान हो गया गोया वोह अकेला रह गया। लिहाज़ा **नमाज़** के फ़ौत होने से इन्सान को इस त़रह़ डरना चाहिये जिस त़रह़ वोह अपने घर के अफ़्राद और मालो दौलत के जाने (या'नी बरबाद होने) से डरता है। (اکمال المعلم بفوائد مسلم، 590/2)

मय्यित को क़ब्र में सूरज डूबता हुवा मा'लूम होता है

हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आलम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जब मरने वाला क़ब्र में

दाख़िल होता है तो उसे सूरज डूबता हुवा मा'लूम होता है तो वोह आंखें मलता हुवा बैठता है और कहता है : "मुझे छोड़ो मैं **नमाज़** पढ़ लूं।"

(ابن ماجہ، 4/503، حدیث:4272)

ऐ फ़िरिश्तो ! सुवालात बा'द में करना....

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (सूरज डूबता हुवा मा'लूम होता है) के तह़्त फ़रमाते हैं : येह एह़सास "मुन्कर नकीर" के जगाने पर होता है, ख़्वाह दफ़्न किसी वक़्त हो। चूंकि **नमाज़े अ़स्र** की ज़ियादा ताकीद है और आफ़्ताब (या'नी सूरज) का डूबना इस का वक़्त जाते रहने की दलील है, इस लिये येह वक़्त दिखाया जाता है। ह़दीस के इस ह़िस्से : (मुझे छोड़ो मैं नमाज़ पढ़ लूं) के तह़्त लिखते हैं : या'नी "ऐ फ़िरिश्तो ! सुवालात बा'द में करना **अ़स्र** का वक़्त जा रहा है मुझे **नमाज़** पढ़ लेने दो" येह वोही कहेगा जो दुन्या में **नमाज़े अ़स्र** का पाबन्द था, **अल्लाह** नसीब करे। इसी लिये रब फ़रमाता है : (پ2، البقرۃ:238) ﴿حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى﴾ "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** निगह्बानी (या'नी ह़िफ़ाज़त) करो सब नमाज़ों और बीच की नमाज़ की" या'नी "तमाम नमाज़ों की ख़ुसूसन **अ़स्र** की बहुत निगह्बानी (या'नी ह़िफ़ाज़त) करो।" **सूफ़िया** फ़रमाते हैं : "जैसे जियोगे वैसे ही मरोगे और जैसे मरोगे वैसे ही उठोगे।" ख़याल रहे कि मोमिन को उस वक़्त ऐसा मा'लूम होगा जैसे मैं सो कर उठा हूं नज़्अ़ वग़ैरा सब भूल जाएगा। मुम्किन है कि इस अ़र्ज़ (मुझे छोड़ दो ! मैं नमाज़ पढ़ लूं) पर सुवाल जवाब ही न हों और हों तो निहायत आसान क्यूं कि उस की येह गुफ़्तगू तमाम सुवालों का जवाब हो चुकी। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/142)

क्या पूछते हो मुझ से, नकीरैन ! लह़्द में लो देख लो ! दिल चीर के, अरमाने मुह़म्मद

तक़्सीमे रिज़्क़ के अवक़ात

ह़ज़रते इमाम शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कहते हैं मैं ने सय्यिदी अ़ली ख़वास को येह फ़रमाते हुए सुना है कि माद्दी (या'नी महसूस होने वाला) रिज़्क़ जो कि हमारे जिस्मों की ग़िज़ा होता है तुलूए़ फ़ज्र से (या'नी जब फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त शुरूअ़ होता है से ले कर) सूरज एक नेज़ा निकल कर बुलन्द होने तक (या'नी तुलूए़ आफ़्ताब के 20 मिनट के बा'द तक) **अल्लाह** पाक तक़्सीम फ़रमाता है और रूह़ की ग़िज़ा या'नी मा'नवी रिज़्क़ जो कि दिखाई नहीं देता (या'नी दिलो दिमाग़ का सुकून जिस पर मब्नी होता है) अ़स्र की नमाज़ के बा'द से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक तक़्सीम फ़रमाता है। (لواقح الانوار القدسیۃ، ص67) रिवायत का मक़्सद येह है कि इन अवक़ात को ग़फ़्लत में न गुज़ारो बल्कि ज़िक्र व इ़बादत में बसर करो।

मुनाफ़क़त की एक अ़लामत

ख़ादिमे नबी, ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं : मैं ने सरवरे काएनात صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि येह मुनाफ़िक़ की नमाज़ है कि बैठा हुवा सूरज का इन्तिज़ार करता रहे ह़त्ता कि जब सूरज शैत़ान के दो सींगों के बीच आ जाए (या'नी ग़ुरूब होने के क़रीब हो जाए) (مرقاۃ، 300/2) तो खड़ा हो कर चार चोंचें मारे कि उन में **अल्लाह** का थोड़ा ही ज़िक्र करे। (مسلم، ص246، حدیث:1412)

इस ह़दीस से तीन मस्अले मा'लूम हुए

मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : इस ह़दीस से तीन मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि दुन्यवी कारोबार में फंस कर **नमाज़े अ़स्र** देर से (या'नी

मक्रूह वक़्त में) पढ़ना मुनाफ़िक़ों की अ़लामत (या'नी निशानी) है। दूसरे येह कि ग़ुरूब से 20 मिनट पहले कराहत का (या'नी मक्रूहे तह़रीमी) वक़्त है, वक़्ते मुस्तह़ब में अ़स्र पढ़ना चाहिये। तीसरे येह कि रुकूअ़ व सज्दा बहुत इत्मीनान से करना चाहिये। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने जल्द बाज़ (नमाज़ी के) सज्दे को मुर्ग़ के चोंच मारने से तश्बीह दी जो वोह दाना चुगते वक़्त ज़मीन पर जल्दी जल्दी मारता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/381)

अ़स्र के बा'द न सोएं

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स अ़स्र के बा'द सोए और उस की अ़क़्ल जाती रहे तो वोह अपने ही को मलामत करे।"

(مسند ابو یعلیٰ، 4/278، حدیث:4897) (बहारे शरीअ़त, 3/435)

नमाज़ों के अन्दर, ख़ुशूअ़ ऐ ख़ुदा दे पए ग़ौस अच्छा, नमाज़ी बना दे

सुन्नत के तीन हुरूफ की निस्बत से सुन्नते अ़स्र के मुताअ़ल्लिक 3 फ़रामीने मुस्त़फा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ **अल्लाह** पाक उस शख़्स पर रह़्म करे, जिस ने अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़ीं। (ابوداؤد، 2/35، حدیث:1271) ﴿2﴾ जो अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़े, **अल्लाह** पाक उस के बदन को आग पर ह़राम फ़रमा देगा। (معجم کبیر، 23/281، حدیث:611) ﴿3﴾ जो अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़े, उसे आग न छूएगी। (معجم اوسط، 2/77، حدیث:2580) (बहारे शरीअ़त, 1/661)

अ़स्र की सुन्नतों के बारे में मदनी फूल

अ़स्र के फ़र्ज़ों से पहले चार रक्अ़तें पढ़ना सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा है। इस में (और इ़शा के फ़र्ज़ों से पहले की चार सुन्नतों में) पहली और तीसरी रक्अ़त के शुरूअ़ में सना, اَعُوْذُ और بِسْمِ اللّٰه पढ़िये। दूसरी और चौथी

रक्अ़त के बा'द "क़ा'दा" फ़र्ज़ है। दोनों क़ा'दों में अत्तहिय्यात के बा'द दुरूदे इब्राहीम और दुआ़ भी पढ़िये। चार ग़ैर मुअक्कदा सुन्नतें शुरूअ़ करने के बा'द जमाअ़त खड़ी हो जाने की सूरत में दो रक्अ़तों पर सलाम फेर कर जमाअ़त में शामिल हो जाइये। मगर ज़ोहर व जुमुआ़ की सुन्नते क़ब्लिया या'नी फ़र्ज़ों से पहले पढ़ी जाने वाली चार सुन्नतों में चार रक्अ़त पूरी कर लीजिये। इस मस्अले की तफ़्सीली मा'लूमात "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 8 सफ़ह़ा 129 ता 136 पर देखी जा सकती है।

मग़रिब की नमाज़ के फ़ज़ाइल

मक़्बूल ह़ज व उ़म्रह का सवाब

ख़ादिमे नबी, ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मग़रिब की नमाज़ जमाअ़त के साथ अदा की उस के लिये **मक़्बूल ह़ज व उ़म्रह का सवाब** लिखा जाएगा और वोह ऐसा है गोया (या'नी जैसे) उस ने **शबे क़द्र** में क़ियाम किया।" (جمع الجوامع، 7/195، حدیث:22311)

मग़रिब के फ़र्ज़ों के बा'द 6 रक्अ़तें

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ जो शख़्स मग़रिब के बा'द छे रक्अ़तें पढ़े और इन के दरमियान में कोई बुरी बात न कहे, तो बारह बरस की इ़बादत के (सवाब के) बराबर की जाएंगी। (ترمذی، 1/439، حدیث:435) ﴿2﴾ जो मग़रिब के बा'द छे रक्अ़तें पढ़े, उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग बराबर हों। (معجم اوسط، 5/255، حدیث:7245)

नमाज़े अव्वाबीन का त़रीक़ा

मग़रिब की तीन रक्अ़त फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द **छे रक्अ़त** एक ही सलाम से पढ़िये, हर दो रक्अ़त पर **क़ा'दा** कीजिये और इस में अत्तहिय्यात, दुरूदे इब्राहीम और दुआ़ पढ़िये, पहली, तीसरी और पांचवीं रक्अ़त की इब्तिदा में सना, तअ़व्वुज़ व तस्मिया (या'नी सना, اَعُوْذُ और بِسْمِ اللّٰه) भी पढ़िये। छटी रक्अ़त के क़ा'दे के बा'द सलाम फेर दीजिये। पहली दो रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा हुईं और बाक़ी चार नवाफ़िल। येह है **अव्वाबीन** (या'नी तौबा करने वालों) की नमाज़। (अल वज़ीफ़तुल करीमा, स. 26 मुलख़्ख़सन) चाहें तो दो दो रक्अ़त कर के भी पढ़ सकते हैं। **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 666 पर है : बा'दे मग़रिब **छे रक्अ़तें** मुस्तह़ब हैं इन को **सलातुल अव्वाबीन** कहते हैं, ख़्वाह (या'नी चाहें तो) एक सलाम से सब पढ़े या दो (सलाम) से या तीन से और तीन सलाम से या'नी **हर दो रक्अ़त पर सलाम फेरना अफ़्ज़ल है।** (درمختار وردالمحتار، 2/547)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मग़रिब व इ़शा के दरमियान इबादत का सवाब

ह़ज़रते उ़मर बिन अबू ख़लीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बयान करते हैं : हम ने ह़ज़रते अ़त़ा ख़ुरासानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के साथ नमाज़े मग़रिब अदा की, नमाज़ के बा'द जब हम वापस होने लगे तो आप ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया : "मग़रिब व इ़शा के इस दरमियानी वक़्त से लोग ग़ाफ़िल हैं, येह **नमाज़े अव्वाबीन** (या'नी तौबा करने वालों की नमाज़) का वक़्त है। जिस ने इस दौरान नमाज़ की ह़ालत में क़ुरआने करीम की तिलावत की गोया वोह जन्नत की क्यारी में है।" (अल्लाह वालों की बातें, 5/259)

इशा की नमाज़ के फ़ज़ाइल

मुनाफ़िक़ों पर नमाज़े फ़ज्र व इशा भारी है

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है : ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "सब नमाज़ों में ज़ियादा गिरां (या'नी बोझ वाली) मुनाफ़िक़ों पर नमाज़े **इशा** व **फ़ज्र** है, और जो इन में फ़ज़ीलत है अगर जानते तो ज़रूर ह़ाज़िर होते अगर्चे सुरीन (या'नी बैठने में बदन का जो ह़िस्सा ज़मीन पर लगता है उस) के बल घिसटते हुए या'नी जैसे भी मुम्किन होता आते।" (ابن ماجہ، 1/437، حدیث:797)

शर्ह़े ह़दीस

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : क्यूं कि मुनाफ़िक़ सिर्फ़ दिखलावे के लिये **नमाज़** पढ़ते हैं, और वक़्तों में तो ख़ैर जैसे तैसे पढ़ लेते हैं मगर **इशा** के वक़्त नींद का ग़लबा, **फ़ज्र** के वक़्त नींद की लज़्ज़त उन्हें मस्त कर देती है। इख़्लास व इ़श्क़ तमाम मुश्किलों को ह़ल करते हैं वोह उन में है नहीं, लिहाज़ा येह **दो नमाज़ें** उन्हें बहुत गिरां (या'नी बहुत बड़ा बोझ मा'लूम होती) हैं, इस से मा'लूम हुवा कि जो मुसल्मान इन दो नमाज़ों में सुस्ती करे वोह मुनाफ़िक़ों के से काम करता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/396)

मुनाफ़िक़ीन इशा व फ़ज्र में आने की त़ाक़त नहीं रखते

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से मरवी है कि सरवरे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "हमारे और मुनाफ़िक़ीन के दरमियान अ़लामत (या'नी पहचान) **इशा** व **फ़ज्र** की नमाज़ में

ह़ाज़िर होना है क्यूं कि मुनाफ़िक़ीन इन नमाज़ों में आने की त़ाक़त नहीं रखते।"

(موطاامام مالک، 1/133، حدیث:298)

ह़दीस में कौन से मुनाफ़िक़ मुराद हैं ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : इस ह़दीस में बयान कर्दा मुनाफ़िक़ से मुराद (दौरे रिसालत के बद तरीन कुफ़्फ़ार नहीं हैं जो ख़ुद को झूटमूट मुसल्मान ज़ाहिर करते थे मगर दिल से काफ़िर थे बल्कि यहां मुराद) "मुनाफ़िक़े अ़मली" है। (जो कि ह़क़ीक़त में मुसल्मान है) ह़दीस के इस ह़िस्से : "मुनाफ़िक़ीन इन नमाज़ों में आने की त़ाक़त नहीं रखते" से मुराद है : हम इन नमाज़ों को चुस्ती के साथ और ख़ुशी ख़ुशी अदा करते हैं, हमें इन दोनों नमाज़ों को बा जमाअ़त अदा करने के लिये मस्जिद आने में कोई मशक़्क़त नहीं होती जब कि मुनाफ़िक़ीन पर येह नमाज़ें भारी हैं इस लिये वोह इन्हें बश्शाशत (या'नी ख़ुशी) और चुस्ती के साथ अदा करने की त़ाक़त नहीं रखते। (आगे चल कर फ़रमाते हैं :) वाज़ेह़ रहे कि **मुनाफ़िक़े** (अ़मली) इ़बादत क़ाइम करने के लिये नहीं बल्कि आ़दत की वज्ह से **नमाज़** पढ़ता है और चूंकि उस का नफ़्स **नमाज़** पढ़ने को ना पसन्द करता है इस लिये वोह सब के साथ नहीं बल्कि अपने घर में तन्हा **नमाज़** पढ़ता है। (आगे मज़ीद तह़रीर करते हैं :) बा'ज़ आ़रिफ़ीन (या'नी **अल्लाह** पाक की पहचान रखने वालों) का क़ौल है : नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त पाबन्दी से पढ़ने से दुन्या के मुश्किल काम आसान हो जाते हैं, **नमाज़े अ़स्र व इशा** में जमाअ़त की पाबन्दी से **ज़ोह्द** पैदा होता (या'नी दुन्या से बे रग़्बती नसीब होती) है, "ख़्वाहिशात" की पैरवी से **नफ़्स** बाज़ रहता है।

(فیض القدیر، 1/84، 85)

नमाज़े इशा से पहले सोना

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो नमाज़े इशा से पहले सोए **अल्लाह** पाक उस की आंख को न सुलाए। (جمع الجوامع، 7/289، حدیث:23192)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अपने हुक्काम को एक फ़रमान लिखा जिस में येह भी है कि जो **इशा** से पहले सो जाए ख़ुदा करे उस की आंखें न सोएं, जो सो जाए उस की आंखें न सोएं, जो सो जाए उस की आंखें न सोएं। (مؤطا امام مالک، 1/35، حدیث:6)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के फ़रमान के मुतअ़ल्लिक़ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : जनाबे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की येह दुआ़ए ज़रर इज़्हारे ग़ज़ब (या'नी नाराज़ी ज़ाहिर करने) के लिये है। ख़याल रहे कि **नमाज़े इशा** से पहले सो जाना और इ़शा के बा'द बिला ज़रूरत जागते रहना (येह दोनों ही काम) सुन्नत के ख़िलाफ़ और नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ना पसन्द है लेकिन **नमाज़** से पहले सो कर **नमाज़** ही न पढ़ना और ऐसे ही **इशा** के बा'द जाग कर **फ़ज्र** क़ज़ा कर देना ह़राम है क्यूं कि **ह़राम का ज़रीआ़** भी ह़राम होता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/ 377)

इशा से क़ब्ल सोना मक्रूह है

"**बहारे शरीअ़त**" में है : दिन के इब्तिदाई ह़िस्से में सोना या मग़रिब व इ़शा के दरमियान में सोना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, 3/436, ह़िस्सा : 16)

इशा के बा'द गुफ़्तगू करने की तीन सूरतें

﴾1﴿ इल्मी गुफ़्तगू, किसी से मस्अला पूछना या उस का जवाब देना या उस की तह़क़ीक़ व तफ़्तीश करना इस क़िस्म की गुफ़्तगू सोने से अफ़्ज़ल है ﴾2﴿ झूटे क़िस्से कहानी कहना मस्ख़रा पन और हंसी मज़ाक़ की बातें

करना येह मक्रूह है ﴿3﴾ मुवानसत की बातचीत करना जैसे मियां बीवी में या मेहमान से उस के उन्स के लिये कलाम करना येह जाइज़ है इस क़िस्म की बातें करे तो आख़िर में ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल हो जाए और तस्बीह़ व इस्तिग़्फ़ार पर कलाम का ख़ातिमा होना चाहिये। (बहारे शरीअ़त, 3/436, हिस्सा : 16)

नमाज़ों के नाम की वज्ह

फ़ज्र : फ़ज्र का मा'ना : "सुब्ह़" है[1] चूंकि फ़ज्र की नमाज़ सुब्ह़ के वक़्त पढ़ी जाती है, इस लिये इस नमाज़ को फ़ज्र की नमाज़ कहा जाता है।

ज़ोह्र : ज़ोह्र का एक मा'ना है : "ज़हीरा" (या'नी दोपहर), चूंकि येह नमाज़ दोपहर के वक़्त पढ़ी जाती है, इस लिये इसे ज़ोह्र की नमाज़ कहा जाता है।

अ़स्र : अ़स्र का मा'ना : "दिन का आख़िरी हिस्सा" चूंकि येह नमाज़ इसी वक़्त में अदा की जाती है इस लिये इस नमाज़ को अ़स्र की नमाज़ कहा जाता है।

मग़रिब : मग़रिब का मा'ना सूरज ग़ुरूब होने का वक़्त है, चूंकि मग़रिब की नमाज़ सूरज के ग़ुरूब होने के बा'द अदा की जाती है इस लिये इस नमाज़ को मग़रिब की नमाज़ कहा जाता है।

इ़शा : इ़शा के लुग़वी मा'ना : रात की इब्तिदाई तारीकी के हैं,[2] चूंकि येह नमाज़ अंधेरा हो जाने के बा'द अदा की जाती है इस लिये इस नमाज़ को इ़शा की नमाज़ कहा जाता है। (شرح مشکل الآثار للطحاوی، 3/31-34ملخصاً)

तू पांचों नमाज़ों का पाबन्द कर दे पए मुस्त़फ़ा हम को जन्नत में घर दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

1... तरजमए कन्ज़ुल ईमान, पारह : 15, बनी इसराईल : 78

2... नुज़्हतुल क़ारी, 2/245

अगले हफ़्ते का रिसाला